“सच्ची खोज अच्छी खबर”

# ज्ञान सरोवर

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ष : 17 अंक : 35 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 23 अक्टूबर से 29 अक्टूबर, 2025 पृष्ठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये


## पुलिसकर्मियों का अटूट समर्पण राष्ट्र और लोगों को रखता है सुरक्षित, पुलिस स्मृति दिवस पर बोले पीएम मोदी

नई दिल्ली(संवाद सूत्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पुलिस

स्मृति दिवस पर शुभकामना दी। पीएम मोदी ने पुलिसकर्मियों की सराहना करते हुए कहा कि उनका अटूट समर्पण राष्ट्र और इसके लोगों को सुरक्षित रखता है। पुलिस स्मृति दिवस पर हम अपने पुलिसकर्मियों के साहस को नमन करते हैं और कर्तव्य पालन के दौरान उनके सर्वोच्च बलिदान को याद करते हैं। पीएम ने एक्स पर कहा, उनका दृढ़ समर्पण हमारे देश और लोगों को सुरक्षित रखता है। संकट के समय में उनकी बहादुरी और प्रतिबद्धता सराहनीय है। पुलिस स्मृति दिवस हर साल 21 अक्टूबर को मनाया जाता है। इसे उन 10 सीआरपीएफ कर्मियों की याद में बलिदान दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो 1959 में इसी दिन लद्दाख के हाट स्प्रिंग क्षेत्र में चीनी सैनिकों द्वारा घात लगाकर किए गए हमले में बलिदान हो गए थे। एक्स पर एक पोस्ट में उपराष्ट्रपति ने कहा कि राष्ट्र की रक्षा और हमारे लोगों की सुरक्षा के लिए उनकी अटूट प्रतिबद्धता का सम्मान है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि पुलिस बलों ने नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के अलावा अपराध और आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरों को विफल किया है। उन्होंने एक्स पर लिखा कि पुलिस स्मृति दिवस पर पुलिस कर्मियों को हार्दिक बधाई। इसके अलावा गृह मंत्री ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना के बहादुर योद्धाओं को भी श्रद्धांजलि अर्पित की। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सीमा पर अस्थिरता के साथ ही समाज में नए प्रकार के अपराध, आतंकवाद और वैचारिक युद्ध उभर रहे हैं। पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए ेसह ने कहा कि सेना और पुलिस अलग–अलग मंचों पर कार्य करते हैं, लेकिन उनका मिशन एक ही है, राष्ट्र की रक्षा करना।

## महाराष्ट्र ने फसल क्षतिपूर्ति के लिए 648 करोड़ रुपये मंजूर किए

मुंबई। महाराष्ट्र सरकार ने इस साल मानसून के दौरान अत्यधिक बारिश और बाढ़ से प्रभावित किसानों को राहत देने के लिए 648.15 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। राहत एवं पुनर्वास मंत्री मकरंद जाधव– पाटिल ने कहा कि एक विशेष उपाय के तहत राहत सीमा को भी दो हेक्टेयर से बढ़ाकर तीन हेक्टेयर कर दिया गया है। उन्होंने बयान में कहा कि इस निर्णय का उद्देश्य वर्षा प्रभावित किसानों को तत्काल वित्तीय सहायता देना है और इस संबंध में एक सरकारी प्रस्ताव (जीआर) जारी कर दिया गया है। जाधव–पाटिल ने कहा कि अब तक राहत एवं पुनर्वास विभाग ने चालू खरीफ सत्र के दौरान प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित किसानों की सहायता के लिए लगभग 8,139 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं। उन्होंने बताया कि इस फैसले से 6,12,177 किसानों को लाभ होगा और 6,56,310.83 हेक्टेयर प्रभावित फसल क्षेत्र को इसके दायरे में शामिल किया जाएगा।

## पूर्व मंत्री मो.आरिफ (नसीम) खान के जन्मदिवस पर समारोह

मुंबई– अ. भा.कांग्रेस कमिटी के शीर्षस्थ वर्किंग कमिटी के सदस्य, पूर्व मंत्री मो.आरिफ (नसीम) खान के जन्मदिवस पर जरिमरी,कुर्ला स्थित कार्यालय पर भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता डॉ. बाबूलाल सिंह, भरत सिंह (प्रवक्ता –महाराष्ट्र कांग्रेस ), पत्रकार अनुराग त्रिपाठी, एड.शरीफ खान (अध्यक्ष समता हॉकर्स यूनियन ),समाजसेवी डॉ. सचिन सिंह, मैथ्यू चेरियन,ने शाल एवं पुष्प गुच्छ प्रदान कर नसीम खान को शुभकामनायें प्रदान किया। इस अवसर पर नसीम खान के हजारों समर्थको ने गाजे बाजे के साथ, नाच गा कर,पटाखे फोड़कर,केक काटकर बधाईयां, शुभकामनायें प्रदान किया।

## मासमा ने रचा इतिहास एम.एम.आर कमेटी कलंबोली का चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापति और उप चेयरमैन जितेश भंशाली बने

मुंबई। कलंबोली मे एम.एम. आर. कमेटी के चेयरमैन पद पर मेटल एंड स्टेनलेस स्टील मर्चेंट ऐशोसियशन मुंबई (मासमा) के प्रतिनिधि प्रह्लाद प्रजापती और उप चेयरमैन जितेश भंशाली निर्विरोध चयनित कीये गये। मुंबई महानगर के बांद्रा स्थित एम.एम. आर. डी.ए. के मुख्यालय मे चेयरमैन और उप चेयरमैन पद के लिए कमेटी सदस्यगणो उपस्थित हुए। सभी सदस्यगण ने मिलकर प्रह्लाद प्रजापति को चेयरमैन और जितेश भंशाली उप चेयरमैन के मनोनीत करते ही सभी ने खुशी ज़ाहिर की एम.एम.आर. कमेटी मे पहली बार मे मासमा का चेयरमैन और उप चेयरमैन बना जो मासमा के लिए ऐतिहासिक पल बन गया। मासमा

अध्यक्ष चंदन भंशाली, मासमा उपाध्यक्ष गणपत पुरोहित कलंबोली सदस्य अशोक भंडारी, संजय जैन इस यादगार पल के साक्षी बनने के लिए उपस्थित रहे। मासमा कार्यालय मे शाम को चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापति और उप चेयरमैन जितेश भंशाली के सम्मान मे स्वागत समारोह भव्यातिभव्य रुप से सम्पन्न हुआ। मासमा अध्यक्ष चंदन भंशाली ने इस पल को यादगार बनाने के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष साथ सहकार देने वाले सभी का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन मासमा सचिव प्रवीण अंगारा ने कीया। चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापति और उप चेयरमैन जितेश भंशाली ने भी सदस्यो को संबोधित कीया। मासमा उपाध्यक्ष गणपत पुरोहित, मासमा सह सचिव अमृत संघवी, मासमा कोषाध्यक्ष हनुमान गोंधी उपस्थित रहे। मासमा मिडिया कन्वेयर मंगलचंद सेठ ने भी विचार प्रकट कीये। सभी को मिठाई खिलाकर मुहुँ मिठा करवाया। महाराष्ट्र के केबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा के कार्यालय मे जाकर मासमा अध्यक्ष चंदन भंशाली के नेतृत्व मे चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापति, उप चेयरमैन जितेश भंशाली, संजय जैन, अशोक भंडारी शिष्टाचार मुलाकात की। कार्य सम्राट लोकप्रिय केबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा ने मासमा प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त कीया हर पल आपके साथ रहूँगा। यह जानकारी मासमा मिडिया कन्वेयर मंगलचंद सेठ ने दी।

# पर्व है पुरुषार्थ का

दीप के दिव्यार्थ का
देहरी पर दीप एक जलता रहे
अंधकार से युद्ध यह चलता रहे
हारेगी हर बार अंधियारे की घोर–कालिमा
जीतेगी जगमग उजियारे की स्वर्ण–लालिमा
दीप ही ज्योति का प्रथम तीर्थ है
कायम रहे इसका अर्थ, वरना व्यर्थ है
आशीषों की मधुर छांव इसे दे दीजिए
प्रार्थना–शुभकामना मेरी ले लीजिए!!
झिलमिल रोशनी में निवेदित अविरल शुभकामना
आस्था के आलोक में आदरयुक्त मंगल भावना!!!
दीपोत्सव की शुभकामनाएं!!

सुरेश भट्टड एवं परिवार

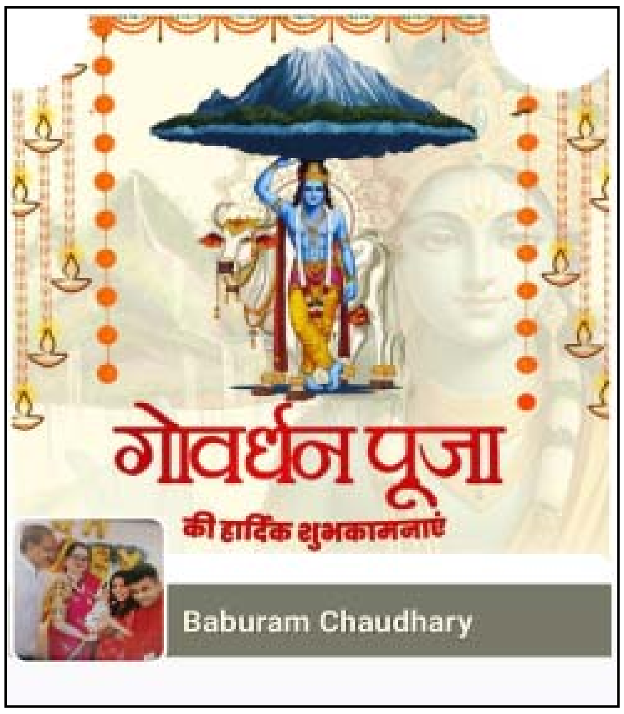


# पहले बनो तू राम...

मुझको जलाने वालों, शोर तू मचाने वालों,
कागज के पुतले को, हर साल क्यों जलाते हो।

पाप में नहाने वालों, रिश्वत भी खाने वालों,
मारो खुद के रावण को, तू क्यों भूल जाते हो।

पहले बनो तू राम, करो कुछ निष्काम,
तप-त्याग-संयम का दीप क्या जलाते हो?

राम ने किया था तप, तब किया था मेरा वध,
खुद को टटोलो पहिले, ताली क्यों बजाते हो।

ज्ञानी हूँ मैं ध्यानी हूँ, थोड़ा अभिमानी हूँ,
मेरे जइसे हो भी नहीं, पर बदला चुकाते हो।

शिव का पुजारी हूँ, मैं भी तो खानदानी हूँ,
राम और जानकी के विरुद्ध क्यों बताते हो।

जब भी गया सुनों, मंदोदरी के साथ गया,
उंगली से छुआ नहीं, पातकी बताते हो।

रार, राम से न थी, बस मुक्ति ही पानी थी,
चेहरे पे रोज नया क्यों चेहरा लगाते हो?

नहीं हैं सुरक्षित नारी, गाँव हो या हो शहर,
होता है बलात रोज, सीना क्यों फुलाते हो?

लंका की मर्यादा थी, कि लक्ष्मण की जान बची,
फिर भी मेरे सीने पे अग्नि-बाण तू चलाते हो।

माँ जानकी का हरन करना मेरा एक मकसद था,
कितनी कॉलोनी, पेंशन रोज ही चबाते हो।

राम की राहों पे बोलो, कितने चले हो तुम,
गलतियों के हे! पुतले, मुझे क्यों जलाते हो।

रामकेश एम. यादव
'सरस' मुम्बई।

!! ओम नमो नारायणाय !!

**चरण शरण में आए के , धरु तुम्हारा ध्यान**
**संकट से रक्षा करो, पवन पुत्र हनुमान**
**दुर्गम काज बनाए के, कीजो भगत निहाल**
**अब मोरी विनती सुनो, हे अंजनी के लाल**
**हाथ जोड़ विनती करू सुनो वीर हनुमान**
**कष्टो से रक्षा करो, राम भक्ति देहु दान**
**पवन पुत्र हनुमान**

## हरि शरणं

**सीता लखन समेत प्रभु, सोहत तुलसीदास**
**हरषत सुर बरषत सुमन, सगुन सुमंगल बास**

तुलसीदास जी कहते हैं कि सीताजी और लक्ष्मणजी के सहित प्रभु श्री रामचंद्र जी सुशोभित हो रहे हैं, देवतागण हर्षित होकर फूल बरसा रहे हैं। भगवान का यह सगुण ध्यान सुमंगल-परम कल्याण का निवास स्थान है।

## हरि शरणं

**तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग**
**तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग**

गोस्वामी जी कहते है कि स्वर्ग और मोक्ष के सब सुखों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाए, तो भी वे सब मिलकर (दूसरे पलड़े पर रखे हुए) उस सुख के बराबर नहीं हो सकते, जो लव (क्षण) मात्र के सत्संग से होता है

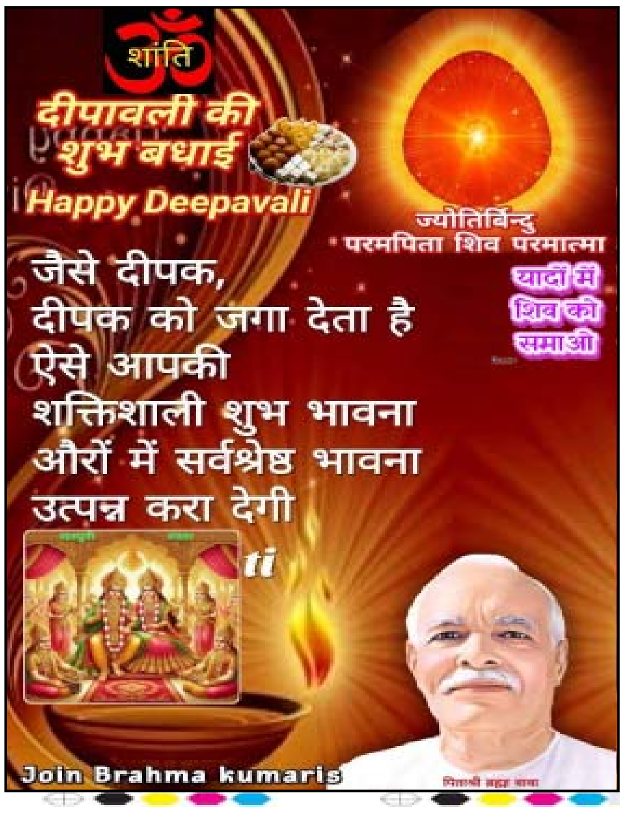

# मुर्दों के टीले का कौन होगा सरदार?

## अजमेर कांग्रेस में शहर और देहात के लिए दौड़ धूप शुरू!

सुरेन्द्र चतुर्वेदी

अजमेर में जनता के किसी भी मुद्दे पर विपक्ष की भूमिका निभाने में मुर्दा साबित हुई कांग्रेस आज भी सचिन और गहलोत गुट के बीच कबड्डी खेलने में लगी हुई है।इस शहर में भाजपा जीवित है क्यों कि कांग्रेस मुर्दा है। कहने को यहां एक से बढ़ कर एक धांसू नेता हैं। पूरे नामधारी दिनकर! मगर हर नेता सिर्फ़ मूंछों को मरोड़ने की राजनीति में लगे हुए हैं।

अब कांग्रेस की सिटी बस के लिए नए कन्डेक्टर की तलाश है तो पूरे कांग्रेस में हलचल मची हुई है। जिसे देखो वह शहर और देहात अध्यक्ष बनने के लिए कुछ भी करने को तैयार है। कई तो तेल की शीशी लेकर घूम रहे हैं। तेल की शीशी लेकर घूमने के पीछे मेरा आशय वह नहीं जो आप समझ रहे हैं। मेरे कहने का आशय चंपी मालिश से है।

पिछले दिनों एक केंद्रीय पर्यवेक्षक अजमेर आए। उनके आगमन पर ऐसा संदेश दिया गया जैसे वह ही अध्यक्ष बना कर जायेंगे । यही वज़ह रही कि कई दावेदारों ने नवरत्न तेल की शीशी का कूल कूल, ठंडा ठंडा प्रभाव इस्तेमाल किया।

डॉ रघु शर्मा और धर्मेन्द्र राठौड़ से लेकर महेन्द्र सिंह रलावता और विजय जैन तक ने अपनी जन्मजात प्रतिभाओं से पर्यवेक्षक साहब को परिचित करवाया। बैठक में धक्का मुक्की के सवाल पर पर्यवेक्षक महोदय कह गए कि उनकी पार्टी "लड़ाके" तैयार कर रही है। अब उनसे कौन कहे कि अजमेर के कांग्रेसी तो धक्का मुक्की ! हाक़ामस्ती!और गुजराती मारपीट में पहले से ही हुनरमंद हैं। आपस में उलझने के उनको बहाने ढूंढने ही नहीं पड़ते।

ज़रा सोचिए कि अजमेर के छापामार गोरखे! जब शौचालयों तक में अपनी चौरासी कलाओं का मौलिक प्रदर्शन कर सकते हैं तो तंवर साहब जैसे पर्यवेक्षक उनको कहां पार पा सकते हैं।

अजमेर कांग्रेस का नया अध्यक्ष कौन होगाघ्सचिन जीवी होगा या गहलोत जीवी, बूढ़ा होगा या जवान!और तो और स्त्रीलिंग होगा या पुरलिंग! या उभय लिंग

जैसे ही यह सवाल किसी कांग्रेसी से पूछा जाता है वह कोई नया नाम सामने ले आता है।

जहां तक कुछ सियासती विश्लेषकों का सवाल है वह साफ़ कह रहे हैं कि यदि आने वाले समय में कांग्रेस को ज़िले में पुनर्जीवित करना है तो नांद नरेश राठौड़ बाबा सर्वोत्तम हैं। इसके पीछे विश्लेषकों का तर्क है कि राठौड़ बाबा सर्वव्यापी हैं। उनका सियासती क्षेत्र भले ही अजमेर नहीं रहा हो मगर उनकी छवि राज्य व्यापी है। वह राज्य स्तरीय कर्मचारी नेता रहे हैं और मेरा मानना है कि कर्मचारी राजनीति पार्टीबाजों से ऊपर होती है।

गहलोत जब सत्ता में थे उन्होंने राज्य के अधिकारियों पर एक छत्र राज किया। पूरे राजस्थान में कहांघकिस पोस्ट परघकिसे लगाना हैघ्यह फ़ैसला राठौड़ बाबा ने डंके की चोट पर किया। आज भी प्रशासनिक अधिकारियों में उनकी पकड़ अजमेर के किसी भी अन्य नेता से कहीं अधिक है।

इतने दबदबे के बावजूद वह खांटी राजनेता नहीं। उनको उदारवादी नेता माना जाता है। बदले की भावना उनमें हो सकता है कहीं हो मगर नज़र नहीं आती। यही वज़ह है कि सचिन पायलट के कई चहते नेता भी उनको पसंद करते हैं। मुरारी लाल मीणा , हनुमान बैनीवाल, गजेन्द्र सिंह शेखावत सहित दर्जनों विपक्षी नेता उनको गहलोत कार्यकाल में भी पसंद करते थे।

इससे पहले कि ब्लॉग आगे बढ़ाऊं यह बता दूं कि मैं राठौड़ बाबा का ध्रुव विरोधी रहा हूं। जब वह सत्ता में थे उनकी जितनी ख़ाल मैंने उतारी शायद ही किसी पत्रकार ने उतारी हो मगर उनकी विशेषताओं का तब भी मैं कायल था आज भी हूं।

राठौड़ बाबा अजमेर के अकेले ऐसे नेता हैं जिनको भाजपा के जुड़वां भाई मोदी और शाह भी जानते हैं तो सोनिया और राहुल गांधी भी। लाल डायरी ने उनको नुक़सान भले ही रत्ती भर नहीं पहुंचाया हो पर प्रचारात्मक लाभ जम कर पहुंचाया।

कांग्रेस अध्यक्ष कोई भी बने!राठौड़ बाबा बने या न बनें! इससे मुझे कुछ लेना देना नहीं मगर जितने भी नामधारी! इन दिनों अध्यक्ष पद पाने हथियाने की दौड़ धूप में लगे हैं उनमें एक भी ऐसा दिग्गज नाम नहीं जो राठौड़ बाबा के पासंग बैठ सके। संगठन चलाने की जितनी कुव्वत उनमें है उतनी शायद ही किसी में हो।

उनमें यदि कोई कमी है तो वह सचिन की गुड़बुक में नहीं और खूबी है तो वह गहलोत की गुड़बुक में हैं। यदि ऊपर दोनों नेता दिल से एक हो जाएं तो राठौड़ बाबा अजमेर की वेंटिलेटेड कांग्रेस को रिले रेस में जितवा सकते हैं। जहां तक अजमेर देहात अध्यक्ष के लिए नामों का सवाल है वह तो डॉ रघु शर्मा के पुत्र सागर शर्मा से ही शुरू होता है उनके नाम पर ही समाप्त। उनकी योग्यताओं के समक्ष सब कांख के बाल हैं।

# हादसों का देश: जल, थल और नभ में जलती ज़िंदगियाँ

सुरेन्द्र चतुर्वेदी

पिछले कुछ महीनों में देश जैसे किसी अदृश्य अग्निकुंड से गुज़र रहा है। हादसे अब इत्तफ़ाक़ नहीं लगते, वे एक प्रवृत्ति बन गए हैं । जल, थल और नभ कृ तीनों ही दिशाओं से मृत्यु की ख़बरें आ रही हैं। ऐसा लगता है मानो सुरक्षा की हर परत पिघल चुकी है और ज़िंदगी अब महज़ "संयोग" पर टिकी है। आज का मेरा यह ब्लॉग दो भागों में है। दूसरा भाग मेरे ज्योतिष अध्ययन पर आधारित है तो प्रस्तुत भाग मेरे सामान्य ज्ञान पर आधारित। पहले आप यह ब्लॉग पढ़ लें।

सबसे ताज़ा त्रासदी राजस्थान के जैसलमेर ज़िले से आई ,जहाँ एक ए.सी. स्लीपर बस धधक उठी। यात्रियों के पास बाहर निकलने का रास्ता नहीं था। धुएँ, आग और चीख़ों के बीच बस राख हो गई, और दर्जनों लोग ज़िंदा जल गए। 'कुछ ही दिन पहले बालोतरा में एक स्कॉर्पियो हादसे के बाद आग की लपटों में बदल गई थी जिसमें चार युवक ज़िंदा जल गए थे। एक ने अस्पताल में दम तोड़ दिया था। ये दृश्य केवल लाशों का नहीं, एक असफल शासन और सुन्न हो चुकी व्यवस्था का आईना हैं। और यह सिर्फ़ ज़मीन की कहानी नहीं है । यहां आसमान भी सुरक्षित नहीं रहा। जून में अहमदाबाद से उड़ान भरने के बाद एयर इंडिया फ्लाइट 171 दुर्घटनाग्रस्त हुई, जिसमें 200 से ज़्यादा लोग मारे गए। उससे पहले उत्तराखंड में केदारनाथ के पास एक हेलिकॉप्टर गिरा कोई नहीं बचा।'

धरती पर सड़कें और पुल जानलेवा हैं, तो आसमान में उड़ानें भी मौत का पता पूछ रही हैं। जल में भी राहत नहीं। हर मानसून में नावें पलटती हैं, नदी किनारों पर परिवार बह जाते हैं, लेकिन सुरक्षा मानक वहीं के वहीं हैं। प्रश्न यह है कि आख़िर यह देश हर हादसे के बाद ही क्यों जागता हैघ्क्यों हर बार जाँच के नाम पर बयान दिए जाते हैं,घ्और फिर सब कुछ पहले जैसा हो जाता है।

यह महज़ क़िस्मत का नहीं, क़ानून और कर्तव्य के पतन का भी मामला है।घ्घ

बसों में इमरजेंसी गेट नहीं, भवनों में अग्निशमन यंत्र झूठे दिखावे भर के, सड़कों पर ओवरलोड ट्रक और नींद में ड्राइवर, हवाई जहाज़ों में पुरानी तकनीक कृ ये सब मौत की खुली दावत हैं। जब तक हम हादसों को "प्राकृतिक दुर्घटना" मानते रहेंगे, तब तक उनकी पुनरावृत्ति रोकना असंभव है।

राजस्थान जैसे राज्य में तो यह और भी चिंताजनक है। गर्म जलवायु और लापरवाही मिलकर अग्निकांडों को आम बना रहे हैं। अजमेर, भीलवाड़ा, जोधपुर और जयपुर जैसे शहरों में हर महीने कोई न कोई हादसा दर्ज होता है लेकिन अग्निशमन विभाग के संसाधन वर्षों से जस के तस हैं। उद्योगों के लाइसेंस नवीनीकरण में सुरक्षा रिपोर्ट महज़ औपचारिकता है। और जब हादसा हो जाता है, तो बयान वही पुराना कृ "मुआवज़ा दिया जाएगा, जाँच के आदेश हुए हैं।"

यह भीड़तंत्र और बहानेबाज़ी का दौर है लेकिन अब जनता को संवेदना नहीं, सुरक्षा चाहिए।

ज़रूरत है कि सरकार हर ज़िले में "सुरक्षा लेखा आयोग" बनाए जो जल–थल–नभ कृ तीनों क्षेत्र के हादसों का विश्लेषण करे, कमियाँ बताए और समाधान दे। बसों और इमारतों की सुरक्षा ऑडिट रिपोर्ट हर छह महीने में सार्वजनिक हो।

फायर ब्रिगेड और आपदा प्रबंधन दल को आधुनिक उपकरण, ड्रोन और प्रशिक्षण दिया जाए।और सबसे ज़रूरी कृ दोषी अधिकारियों पर सिर्फ़ निलंबन नहीं, आपराधिक मामला दर्ज हो। इन हादसों में मरे लोग कोई आँकड़े नहीं थे ! वे परिवार थे ! सपने थे! भविष्य थे! उनकी मौतें हमें हर बार झकझोरती हैं, लेकिन हम जल्दी ही भूल जाते हैं। अब भूलने की नहीं,जवाबदेही तय करने की घड़ी है।अगर आज हमने इन हादसों से" सबक नहीं लिया, तो कल इतिहास हमारे बारे में यही लिखेगा "भारत हादसों का नहीं, लापरवाही का देश था।

# भाईदूज पर मुलुंड में कुश्तीयों का विराट दंगल

मुंबई। जय मल्हार कुश्ती उत्सव मंडल, जय हनुमान व्यायाम शाला एवं मुलुंड सिटीजन चैरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा लगातार 56वें वर्ष, भाईदूज के पावन पर्व पर कुश्तीयों का विराट दंगल गुरुवार दिनांक 23.10.2025 को शिवाजी चौक मैदान, गुरु गोविन्द सिंह मार्ग, मुलुंड कॉलोनी पर सायं 5 बजे से आयोजित किया गया है।

इस प्रतियोगिता की शुरुआत (संस्थापक)मुंबई के पूर्व महापौर आर. आर. सिंह ने किया था। मुकाबला का शुभारम्भ डॉ.राजेंद्र प्रसाद सिंह (महासचिव–मुंबई कांग्रेस) करेंगे। प्रमुख अतिथि के रूप में केतन शाह(अध्यक्ष–ई. मु.जिला कांग्रेस), सन्मानित अतिथि के रूप में वरिष्ठ कांग्रेस नेता बी.के.तिवारी, गोविन्द सिंह, राकेश शेट्टी, कुमार नायर,डॉ. बाबूलाल सिंह,राजेश इंगले उपस्थित रहेंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में संतोष सोनावने, प्रतीक धरमशी, संजय माली,संतोष विश्वकर्मा, विठ्ठल सातपुते, शहाजी दिवेकर, भरत पटेल, प्रसन्ना टाथरे,डॉ. सचिन सिंह, प्रभाकर कांबले, अनिल झोलेकर उपस्थित रहेंगे। आयोजक राजेंद्र उठवाल, मोहनलाल राज, ने सभी कुश्ती प्रेमियों से इस अवसर पर उपस्थित रह कर नामचीन पहलवानों की कुश्ती देखने का अनुरोध किया है।

# सम्पादकीय...

## मंदिरों की संपत्ति

सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर के खजाने की खोजबीन पूरी हो गई। दो दिन तक चले इस अभियान में इस मंदिर के खजाने से कुछ विशेष नहीं मिला। जहां पहले दिन कुछ बर्तन और खाली संदूक मिले, वहीं दूसरे दिन सोने की एक और चांदी की तीन छड़ें मिलीं। आम धारणा यह थी कि खजाने में बहुत सारी संपत्ति मिलेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। संभवतः इसका कारण यह रहा कि 54 वर्ष पहले जब इस खजाने को खोला गया था तो उसकी संपत्ति एक बैंक में जमा कर दी गई थी। इसके बाद भी प्रश्न यह है कि क्या इतने वर्षों में खजाने में कोई सामग्री नहीं रखी गई? वस्तुस्थिति जो भी हो, इस मंदिर के खजाने को खोलने के निर्णय का विरोध भी किया गया। चूंकि खजाना खोलने का आदेश सुप्रीम कोर्ट ने दिया था, इसलिए विरोध का कोई औचित्य नहीं बनता। प्रश्न यह नहीं है कि इस मंदिर के खजाने से अपेक्षित संपदा क्यों नहीं मिली, बल्कि यह है कि मंदिरों की संपत्ति और विशेष रूप से चढ़ावे में मिली सामग्री के रखरखाव की प्रक्रिया पारदर्शी क्यों नहीं है? यह सही समय है कि सभी मंदिरों को मिलने वाले चढ़ावे की सामग्री का रखरखाव पारदर्शी तरीके से किया जाए। इसका कोई औचित्य नहीं कि मंदिर के खजाने दशकों बाद खोले जाएं। एक ओर जहां यह आवश्यक है कि मंदिरों के चढ़ावे में मिले धन एवं अन्य सामग्री का रखरखाव पारदर्शी तरीके से किया जाए, वहीं दूसरी ओर इसकी भी आवश्यकता है कि उसका उपयोग धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यों में ही किया जाना सुनिश्चित किया जाए। यही बात मंदिरों की अन्य संपत्ति पर भी लागू होती है। इसे पिछले दिनों हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट के उस आदेश ने रेखांकित भी किया, जिसमें कहा गया है कि मंदिरों को दान की गई धनराशि का समुचित उपयोग किए जाने की पारदर्शी व्यवस्था बने। हिमाचल हाई कोर्ट ने मंदिरों की आय को देवी–देवताओं की संपत्ति बताया और यह स्पष्ट किया कि चढ़ावे में मिले धन का उपयोग सामाजिक, शैक्षणिक, धर्मार्थ कार्यों में खर्च किया जाए। उसने अपने आदेश में यह भी साफ किया कि मंदिर के ट्रस्टी केवल उसके संरक्षक हैं और उसकी संपत्ति पर सरकार का कोई अधिकार नहीं बनता। हाई कोर्ट ने मंदिरों की आय और व्यय का विवरण सार्वजनिक तौर पर जारी रखने के निर्देश देते हुए यह भी कहा कि सरकारों को मंदिरों की आय को अपनी योजनाओं पर खर्च करने का अधिकार नहीं, लेकिन यह देखने में आ रहा है कि कई राज्यों में मंदिरों का संचालन ऐसे ट्रस्टों की ओर से किया जा रहा है, जिनमें सरकार का दखल होता है। आखिर जब अन्य समुदायों के धार्मिक स्थलों का संचालन उस समुदाय विशेष के लोग करते हैं तो मंदिरों के मामले में ऐसा क्यों नहीं है?

## भोजपुरी कविता – देवारी में दिया।

अबकी बार करा दुआर सुथरी
चदरा कपड़ा घर बार निखरी।

टूटल फुटल गिरल खपरा अरु अंगना।
लिपल पोतल छावल छोवल निखरी।

लौटा थाली चमचा बरतन चमकाई।
झाड़ू कूंचा पोंछा घर बुहारी सुधरी।

अमछा गमछा कुर्ता धोती धोवा ,
लुग्गा साया कचारी सुखाई बहरी।

माटी के दिया मन भावे हिया बड़ा,
देवारी में दिया जरी फेल होई बिजुरी ।

भारती भाव खुश होईहे लक्ष्मी माई,
खाना खजाना भरी दीहे अंजुरी।

**श्याम कुंवर भारती ( राजभर)**
**बोकारो, झारखंड**

# सम्राट विक्रमादित्य के गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित करती मध्य प्रदेश सरकार

भारतीय इतिहास में अनेक प्रतापी शासक हुए हैं। ऐसे ही शासक थे सम्राट विक्रमादित्य। उन्होंने न्याय, शौर्य और कालगणना के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया। सम्राट विक्रमादित्य के सम्मान में इस वर्ष बहुआयामी प्रयास हुए हैं। कुछ वर्ष पहले वार्षिक विक्रमोत्सव प्रारंभ हुआ, फिर विक्रम विश्वविद्यालय का नाम संशोधित किया गया, जो विक्रम विश्वविद्यालय था। यह सम्राट विक्रमादित्य की प्रतिष्ठा के अनुकूल सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय हो गया है। ये सब मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रयासों से हुआ है।

मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस पर राजधानी के नागरिक महानाट्य सम्राट विक्रमादित्य देखेंगे। विक्रम संवत प्रारंभ करने वाले कल्याणकारी शासक रहे सम्राट विक्रमादित्य के सम्मान में महत्वपूर्ण कदम मध्यप्रदेश सरकार द्वारा उठाए गए हैं। मुख्यमंत्री निवास के मुख्य द्वार पर विक्रमादित्य वैदिक घड़ी स्थापित की गई है। वार्षिक विक्रम उत्सव की शुरुआत कर राज्य सरकार ने सम्राट विक्रमादित्य को यथोचित सम्मान देने का कदम उठाया था। शासकीय कैलेंडर में विक्रम संवत का भी उल्लेख प्रारंभ किया गया है। इस क्रम में हाल ही में सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य का नई दिल्ली में अप्रैल– 2025 में मंचन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस महानाट्य के माध्यम से रंगमंच के महत्व से भी पूरे राष्ट्र को अवगत करवा दिया है। वैसे तो इस डिजिटल युग में सूचना और मनोरंजन के कई फॉर्मेट लोकप्रिय हो चुके हैं, लेकिन भारतीय नाट्यशास्त्र की सुदृढ़ और समृद्ध परंपरा से जन–जन को विशेष रूप से युवा वर्ग को परिचित करवाने के लिए नई दिल्ली में सम्राट विक्रमादित्य नाटक का निरंतर तीन दिन मंचन होना महत्व रखता है। मध्यप्रदेश से जो संदेश पूरे राष्ट्र में पहुंचा है वह यह है कि अभिनय, प्रकाश संयोजन, संगीत, वेशभूषा और विशाल मंच के माध्यम से हमारे पौराणिक चरित्रों का जीवन सामने आना चाहिए। हमारे वे आदर्श शासक और आराध्य जो युवा पीढ़ी द्वारा भुला दिए गए हैं उनकी जानकारी देकर युवा पीढ़ी को इस गौरवशाली अध्याय से अवगत करवाना सराहनीय है। युवाओं में सृजन की शक्ति है, जिज्ञासा का तत्व भी विद्यमान है तो फिर उन्हें इन राष्ट्र के आदर्श प्रतीकों की जानकारी से वंचित क्यों रखा जाए और बच्चे भी कलाओं के प्रति रुचि रखते हैं, वे भी इस विधा के लिए जिज्ञासु हो सकते हैं। उन्हें महान व्यक्तित्वों के बारे में ज्ञानवर्धक विवरण देने वाले नाटक मंचन से जोड़ा जाए, यह समय की मांग है।

राज्य स्तर से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान

सम्राट विक्रमादित्य के गुणों के अनुकूल योगदान देने वाले व्यक्ति सम्मानित हों, इस उद्देश्य से जहां पांच–पांच लाख रूपए के तीन राज्य स्तरीय सम्मान देने का प्रावधान किया गया, वहीं 21 लाख रूपए के राष्ट्रीय सम्मान और एक करोड़ एक लाख रूपए सम्मान निधि के अंतर्राष्ट्रीय विक्रमादित्य सम्मान प्रारंभ करने की पहल की गई। निश्चित ही यह सम्मान और पुरस्कार सम्राट विक्रमादित्य के सुशासन, साहस और भारतीय संस्कृति को पोषित करने की परम्पराओं को निरंतर बनाए रखने के लिए प्रेरक बनेंगे।

प्रतापी शासक राजा भोज और अन्य सेनानियों की गाथा भी आएगी मंच पर

भोपाल में कुछ वर्ष पूर्व लाल परेड मैदान पर "जाणता राजा" का हिंदी में मंचन हुआ, जिसमें शिवाजी महाराज के कृतित्व को दर्शाया गया था। (हालांकि जाणता राजा नाटक के हिंदी में कम ही मंचन हुए हैं ।) पर देश की राजधानी में लाल किले पर तीन दिन लगातार सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य का मंचन मध्यप्रदेश के लिए गर्व की बात है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का नवाचार है। हमारे ऐसे दानवीर शासक जिन्होंने वीरता और न्याय के क्षेत्र में भी दृष्टांत स्थापित किए, वे पाठ्य–पुस्तकों में तो आ गए लेकिन पाठ्य– पुस्तकों से बाहर मंच तक क्यों न पहुंचें। आखिर युवा पीढ़ी को उनकी विस्तार पूर्वक जानकारी क्यों नहीं दी जाना चाहिए? यह नवाचार अवश्य ही अन्य राज्यों तक जाएगा। सम्राट विक्रमादित्य के कार्यों की जानकारी देश भर के नागरिकों को मिलेगी। यही नहीं भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण, राजा भोज, सम्राट अशोक और स्वतंत्रता सेनानियों सहित भारत के अन्य गौरवशाली महापुरुषों के कृतित्व की गाथा बताने वाली नाट्य प्रस्तुतियां भी होंगी। नई दिल्ली में सम्राट विक्रमादित्य नाट्य मंचन सफल रहा है। हाथी, घोड़ों के उपयोग और बीसियों की संख्या में कलाकार दल के साथ इतिहास के उस दौर को जीवंत करना साधारण कार्य नहीं है। संस्कृति विभाग, विक्रमादित्य पीठ, सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक संगठन इसके लिए एकजुट हुए। दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने इन कार्यक्रमों के लिए जो समन्वय किया उसकी भी मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रशंसा की है।

प्रधानमंत्री मोदी के संकल्प की भी पूर्ति

राज्यों में नाटक सहित लोक कलाओं के विकास के साथ भारतीय गौरव का स्मरण करते हुए देश की प्राचीन संस्कृति, भारतीय अस्मिता को सामने लाना आवश्यक है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सिर्फ कहने के लिए "विरासत से विकास" की बात नहीं कही, वे चाहते हैं इसका दायरा विस्तृत हो। हमारे युवा हेरिटेज वॉक करें। वे किलों और स्मारकों को देखें। शौर्य और मेधा के धनी भारत के शासकों के योगदान से परिचित हों। भारतीय स्वाभिमान के प्रसंग चर्चा का विषय बनें। सिर्फ बंद कमरों में संगोष्ठियां न हों बल्कि भारत के ऐसे गौरवशाली व्यक्तित्व बच्चों के बीच भी जाने जाएं। स्कूली पाठ्यक्रम से लेकर विद्यालयों, महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में सगर्व उनका उल्लेख हो और नाट्य मंचन उस थ्योरी को प्रैक्टिकल रूप में रंगमंच पर प्रस्तुत करें। महानाट्य सम्राट विक्रमादित्य का मंचन युवाओं को रंगमंच विधा की ओर आकर्षित करने के लिए प्रेरित करेगा।

रंगमंच कलाकार भी उत्साहित

रंगमंच से जुड़े देश के हजारों कलाकारों का मन हर्षित है और वे मुख्यमंत्री डॉ. यादव के प्रति आभार का भाव रखते हैं जो उन्होंने इस कला को महत्व और राज्याश्रय भी दिया। सैकड़ों कलाकारों को प्रोत्साहित किया। थिएटर की शक्ति सही दिशा में और सही विषय को लेकर दिखाई दी है। इस नाते मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस पर लाल परेड ग्राउंड भोपाल में दो और तीन नवम्बर को होने जा रहे नाटक विक्रमादित्य का मंचन दर्शकों द्वारा निश्चित ही पसंद किया जाएगा।

अशोक मनवानी
(विभूति फीचर्स)

# साक्षात् श्रीकृष्ण भगवान का दर्शन है गोवर्धन परिक्रमा

(डॉ. दौलतराज थानवी – विभूति फीचर्स)

भगवान श्रीकृष्ण के जन्म होने से ब्रजभूमि की रज को आज भी कृष्णमयी मानकर लोग मस्तक पर लगाते हैं। कहते हैं यह तो रमण देती है। बड़े–बड़े लक्ष्मी के लाल और सुदामा मंडल के निर्धन भी यहां आकर अपने को धन्य मानते हैं। उनका भक्त हृदय यहां के टुकड़ों के लिए तरसता है। ओड़छे के व्यास बाबा गिड़गिड़ा कर कहते हैं–

ऐसो कब करिहौ मन मेरो।
कर करवा हरवा गुंजन की कुंजन माहि बसेरोध
भूख लगै तब मांगि खाउंगो, गिनौ न सांझ सवेरो।
ब्रज बासिन के टूक–जूंठ अरू घर–घर छाछ महेरो।

ब्रजभूमि को भगवान कृष्ण गौ लोक से साथ लाए थे। ब्रज में आते ही ब्रजभूमि की शान बढ़ गई। गोपी गीत में गोपियां कहते हैं–

जयति ते अधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इंदिरा शश्वदत्र हि।
दयति दृश्यता दिक्षुतावकास् तवयि धृता सवम् तवां विचिन्वते।

जिस प्रकार देवी–देवता, ऋषि–मुनि, श्रुतियों आदि ने आकर गोप–गोपिकाओं का जन्म ग्रहण किया, उसी प्रकार पुराणों और वेदों में इस भूमि को सृष्टि और प्रलय से मुक्त बताया है। यह वह भूमि है जिस पर उद्धवजी ने लोट–पोट होकर रमण रेती को मस्तक लगा दिया। ऐसा इसलिए है कि यहां पर बड़े–बड़े देवता यहां के निवासियों की जूठन खाना, प्रसाद ग्रहण करने की तरह समझते थे। सूरदासजी ने तभी तो लिखा है–

ब्रजवासी पट तर कोउ नाहि
ब्रह्म सनक सिवध्यान न पावत, इनकी जूठनि लै लै खाहि।
हलधर कहयौ, छाक जेंवत संग, मीठो लगत सराहत जाहि।
सूरदास प्रभु जो विश्वम्भर, तो ग्वाल के कौर अधाहि।

ब्रजभूमि को मथुरा और वृन्दावन में आसपास 84 कोस में फैली बताया है। वाराह पुराण के अनुसार भगवान ने कहा कि मथुरा मण्डल 20 योजन में है। यहां के तीर्थ स्थल पर स्नान करना मनुष्यों के लिए अपने पापों का नाश करना है–

विशर्ति योज नानां च माथुरं मम मण्डलम्।
यत्र–तत्र नः स्नात्वा मुच्यते सर्व पात कैः

इस 90 कोस में 12 महावन और 24 उपवन थे। सात सरिताएं थीं। 5 सरोवर थे। पांच पर्वत थे, जिसमें गोवर्धन सर्वाधिक पूजनीय माना गया है। भगवान कृष्ण ने जब गोवर्धन की पूजा का प्रस्ताव रखा तो समस्त देवता, अप्सराएं, नाग, कन्याएं और ब्रजवासियों के झुण्ड आने लगे। गंगाधर शिवजी भी पधारे। राजर्षि, ब्रह्मर्षि, देवर्षि, सिद्धेश्वर, हंस आदि मांगेश्वर तथा हजारों ब्राह्मण वृन्द गिरिराज के दर्शन को पधारे। (गर्ग संहिता)।

भगवान की बताई विधि से गिरिराज की पूजा प्रारंभ की गई। नन्द, उपनन्द, वृषभानु, गोपी वृन्द तथा गोप गण नाचने, गाने और बाजे बजाने लगे। उन सबके साथ हर्ष से भरे हुए श्रीकृष्ण ने गिरिराज की परिक्रमा की।

श्रीकृष्ण ब्रज स्थित शैल गोवर्धन के बीच से एक दूसरा विशाल रूप धारण करके निकले और 'मैं गिरिराज गोवर्धन हूं' यह कहते हुए वहां का सारा अन्नकूट का भोग लगा गए। कुछ समय बाद अन्तर्ध्यान हो गये।

देवराज इन्द्र इससे क्रोधित हो गए। उन्होंने सांवतर्क, मेघगणकों को पानी बरसाने को कहा। घबराये गोपों ने कृष्ण भगवान से कहा– ब्रजेश्वर कृष्ण, तुम्हारे कहने से हम लोगों ने इन्द्र योग छोड़कर गोवर्धन पूजा का उत्सव मनाया, इन्द्र का कोप बहुत बढ़ गया। अब शीघ्र बताओ, हमें क्या करना चाहिए। भगवान कृष्ण ने विश्वास दिलाया कि डटे रहें। समस्त परिकरों के साथ गिरिराज तट पर चलें। जिन्होंने तुम्हारी पूजा ग्रहण की है, वे ही तुम्हारी रक्षा करेंगे। भगवान ने गोवर्धन पर्वत को उखाड़कर एक ही हाथ की एक अंगुली पर खेल–खेल में ही धारण कर लिया। इन्द्र देव ने माफी मांगी।

भगवान ने पुनः पर्वत गिरिराज को धरती पर रख दिया। इसी से गोवर्धन गिरिराज पवित्र तीर्थ हो गया है। भगवान ने अपना हाथ गिरिराज पर रखा वहां का स्थान हस्तचिन्ह– उनके साथ चरण चिन्ह से पवित्र हो गया।

आकाश गंगा ने भगवान का अभिषेक किया। इसी से यहीं पर मानसी गंगा प्रकट हो गई जो सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली है। दुग्ध से भगवान का अभिषेक हुआ, जिसमें वहां गोविन्द कुण्ड प्रकट हो गया। यहां पर भी भक्तजन स्नान करते हैं। भण्डारी वन में ब्रह्माजी ने वृषभानुवन में पुत्री राधिका और श्रीकृष्ण का विवाह सम्पन्न कराया। समीप में ही नन्द नन्दन श्री हरि ने राधा पर मोती न्यौछावर किए थे, जिससे वहां मुक्ता (मोती) सरोवर प्रकट हो गया। यह सरोवर भोग और मोक्ष का दाता है। इस तरह गिरिराज सम्पूर्ण जगत में शिखरों के मुकुट का दर्जा पा सका।

गिरिराज पर भगवान के मुकुट से स्पर्श पाई शिला मुकुट है। जहां की शिला पर बालपन के चित्र बनाए वह चित्र शिला है। जहां बालकों के साथ खेल किया और शिला को बजाया वो वादिनी शिला के रूप में पूजनीय है। साथ में ही कन्दुक क्षेत्र (खेल क्षेत्र) है। यहीं पर शक्रपद और ब्रह्मपद के चिन्ह भी हैं। यहीं पर सभी गोपों की पगडियां चुराई थीं वह स्थान औष्णीष नाम से प्रसिद्ध हो गया। जहां गोपियों से दही लूटा था और गोवर्धन की घाटी में कदम्ब और पलाश के पेड़ों के पत्तों से दोने बनाए थे, वह द्रौण स्थान भी नमस्कार करने पर फल देने वाला हो गया।

कदम्ब खण्ड, श्रृंगार मंडल में श्री नाथ जी सदा लीला करते हैं। श्री रंगनाथ, श्री द्वारकानाथ और श्री बद्रीनाथ प्रसिद्ध पांच नाथ देवताओं के पांच स्तम्भ।

चार स्तम्भों की परिक्रमा होती है। पर्वत बने चिन्ह, कुण्ड और मंदिर तो गिरिराज के जीवित स्वरूप हैं। इस प्रकार श्री गोवर्धन तो भगवान के मुख हैं। मानसी गंगा, भगवान के दो नेत्र हैं। चन्द्रसरोवर नासिका है। गोविन्द कुण्ड अधर हैं। श्रीकृष्ण कुण्ड भगवान का चिबुक है। राधाकुण्ड भगवान की जिव्हा है, ललिता सरोवर, भगवान के कपोल हैं, गोपाल कुण्ड, भगवान के कान हैं, कुसुम सरोवर, भगवान के कर्णान्त भाग हैं। पर्वत पर चित्रशिला भगवान का मस्तक है। वादिनी शिखा उनकी गर्दन है। कुन्दक तीर्थ भगवान का पार्श्व भाग (पीठ) है।

उष्णीष तीर्थ भगवान का कटि भाग है। द्रौण तीर्थ पिछली पसलियां हैं। लौकिक तीर्थ भगवान का पेट है। कदम्ब खण्ड भगवान का हृदय है। श्रृंगार मण्डप में जीवात्मा बसती है। श्रीकृष्ण चरण चिन्ह भगवान का मन है। हस्त चिन्ह तीर्थ बुद्धि है। ऐरावत चरणचिन्ह भगवान के चरण हैं। सुरभि के चरण गोवर्धन के पंख है।

पुच्द कुण्ड उस पर्वत राज की पूंछ है। वत्सकुण्ड उसका बल है। रूद्र कुण्ड क्रोध है। इन्द्र सरोवर काम वासना है। कुबेर तीर्थ उद्योग स्थल कर्म क्षेत्र है। ब्रह्म तीर्थ प्रसन्नता का प्रतीक है। यम तीर्थ गोवर्धन का अहंकार है।

यह गोवर्धन पर्वत श्री हरि के वक्ष स्थल से प्रकट हुआ है। पुलस्त्य मुनि के तेज से यह ब्रज मण्डल में स्थित हो गया। यह साक्षात् श्रीकृष्ण ही है। इसकी परिक्रमा साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण की परिक्रमा है। यहां यह भी संदेश मिलता है कि जीवन का तथ्य जल है। पहाड़ों–पहाडियों पर सरोवर और कुण्ड बनाना, कदम्ब जैसे वृक्षों से उन पर्वतों को श्रृंगार करना जीवन को जल से तृप्त करता है तथा भगवान की छाया का अनुभव होता है।

वर्तमान में हजारों श्रद्धालु इस तीर्थ की परिक्रमा करते हैं। भगवत कृपा से यहां पर चोरी–चकारी, लूट–खसोट और अन्य वारदातें नहीं सुनी हैं। हां कुछ स्वार्थी धन लोलुप यहां पर पर्वतराज के पास खनन कार्य की चेष्टा करते हैं।

इस तरह गिरिराज भगवान की परिक्रमा मात्र एक पर्वत खण्ड की परिक्रमा नहीं है, साक्षात् भगवान की परिक्रमा है जो कहते हैं गौरक्षा करो, जल संग्रहण करो, पेड़–पौधे लगाकर हरा–भरा क्षेत्र बनाओ, जहां राधा कृष्ण का विहार हो। अन्न क्षेत्र खोलकर भगवान को भोग लगाने का प्रबंध हो। (विभूति फीचर्स)

## दीया जलाओ...

दीया जरूर जलाओ
अशांति की जगह शांति का
अज्ञान की जगह ज्ञान का
अंधेरे की जगह उजाले का
अंध पुरानी संस्कृति के विनाश का
भारत की अच्छी संस्कृति का
साथ लेकर चलने के विकास का
सुख, समृद्धि और विकास का
जाति, पंथ, धर्म, संप्रदाय एक होने का
देश को विश्व में उँचाई पर ले जाने का
सत्य,और अहिंसा के बढने का
दीया जलाओ राष्ट्र की एकता का
विज्ञान और तकनीक के विकास का
दीया जरूर जलाओ मानवतावाद का
समता, स्वातंत्र्य और बंधुता का
आज से जरूर दीया जलाओ..।

कवि अनाम डी (कराड, महाराष्ट्र)

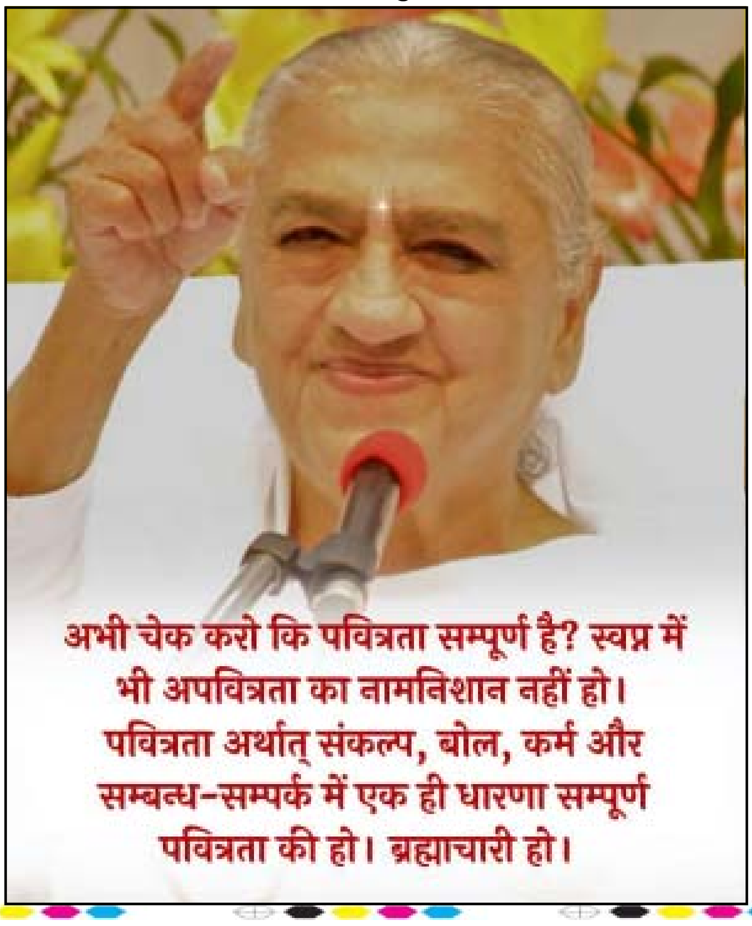


## 'कैसी ये आंख–मिचौली

(मनहरण घनाक्षरी काव्य)

दिवाली बनी है होली,
कैसी ये आंख–मिचौली।
छाएं गमों के बादल ,
कैसे जलेंगे दिए।

सृष्टि से मिली सौगातें,
अश्क नैनों से बहते ।
उजड़ा घर–संसार ,
कैसी जलेंगे दिए।

कहां से लायेंगे पैसा,
कुएं को ढूंढता प्यासा।
ख्वाब रोटी का भी टूटा,
कैसे जलेंगे दिए।

दिवाली बनी है होली,
कैसी ये आंख–मिचौली।
कोई न मिटाता ग़म ,
कैसे जलेंगे दिए –

प्रा.गायकवाड विलास
मिलिंद महाविद्यालय लातूर
महाराष्ट्र

# यम द्वितीयाः भगवान चित्रगुप्त का पूजा दिवस

(अंजनी सक्सेना–विनायक फीचर्स)

भारतीय समाज में कायस्थ एक बुद्धिजीवी एवं चतुर जाति मानी जाती है। मध्यकाल में तो यह मान्यता थी कि राज–काज के संचालन में इससे कुशल एवं प्रवीण कोई अन्य जाति नहीं है। गुप्त काल से लेकर राजपूत, मुगल एवं मराठा शासकों के काल में कायस्थ न केवल महत्वपूर्ण पदों पर आसीन होते थे, बल्कि राजस्व विभाग विशेषकर 'पटवारियों' के पदों पर कायस्थों का ही अधिकार होता था। कायस्थ जाति अपने आपको भगवान चित्रगुप्त का वंशज मानती है। धर्मग्रंथों के अनुसार भगवान चित्रगुप्त, प्रत्येक प्राणी के पाप पुण्यों का लेखा–जोखा रखने वाले देवता हैं यथा वे धर्मराज के सहायक हैं।

भगवान चित्रगुप्त एवं कायस्थों की उत्पत्ति का विवरण कई पुराणों एवं धर्मग्रंथों में मिलता है। इस विवरण के अनुसार ब्रह्मा जी ने अपने मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, पेट या जंघा से वैश्य तथा पैरों से शूद्र उत्पन्न किए। उन्होंने सूर्य एवं चन्द्र आदि ग्रहों के साथ ही बिना पैर वाले जीवों से लेकर अनेक पैर वाले जीवों की रचना की। इस सृष्टि की रचना के बाद ब्रह्मा के शरीर (काया) से बड़ी–बड़ी भुजाओं वाले, श्याम वर्ण, कमलवत् नेत्रवान्, शंख के समान गर्दन वाले, तेजस्वी, अति बुद्धिमान, हाथ में लेखनी और दवात धारण किए हुए, अव्यक्त जन्मा चित्रगुप्त जी उत्पन्न हुए। समाधि खुलने के बाद ब्रह्मा जी ने अपने सामने उपस्थित इस पुरुष से पूछा आप कौन हैं? उस पुरुष ने कहा – मैं आपके ही शरीर से उत्पन्न हुआ हूं इसलिए आप मेरा नामकरण कीजिए तथा मेरे कर्तव्य बताईये।

ब्रह्मा जी ने यह सुनकर कहा कि तुम मेरी काया (शरीर) से उत्पन्न हुए हो इसलिए तुम्हारी संज्ञा कायस्थ है। तुम्हारी उत्पत्ति के समय मेरा मन विश्रांत स्थिति में था अर्थात् मेरा चित्त गुप्त था इसलिए तुम चित्रगुप्त कहलाओगे। तुम धर्मराज की धर्मपुरी में निवास करो और प्राणियों के धर्माधर्म पर विचार करो। धर्म ग्रंथों के अनुसार चित्रगुप्त जी के दो विवाह हुए। एक सूर्य कन्या से तथा दूसरा नाग कन्या से। इन पत्नियों से उनके बारह पुत्र उत्पन्न हुए। इन पुत्रों के नाम पर ही कायस्थों की बारह उपजातियां हैं। भगवान चित्रगुप्त ने अपने इन पुत्रों को शास्त्रों की शिक्षा दी तथा उनके लिए कर्तव्यों का निर्धारण किया। इन कर्तव्यों के अनुसार कायस्थों को देवताओं का पूजन, पितरों का श्राद्ध तथा अभ्यागतों की सेवा करना चाहिए। चित्रगुप्त जी ने अपनी संतति को महिषासुर मर्दिनी देवी की पूजन एवं उपासना करने का भी आदेश दिया।

कायस्थ जाति में भगवान चित्रगुप्त की वर्ष में कम–से–कम दो बार पूजन होती है। इनमें से पहली पूजन दीपावली की द्वितीया को होती है तथा दूसरी होली की द्वितीया (दौज) को। यह दोनों ही तिथियां भाई दौज या यम द्वितीया के नाम से प्रसिद्ध है।

इस दिन प्रत्येक कायस्थ के घर मे चित्रगुप्त जी एवं कलम दवात की पूजा होती है। कई स्थानों पर यह पूजन सामूहिक रूप से भी की जाती है। पूजन के समय भगवान चित्रगुप्त की स्तुति में जो मंत्र कहे जाते हैं, उनका अर्थ है कि दवात–कलम और खल्ली धारण करने वाले भगवान चित्रगुप्त आप लेखकों को अक्षर प्रदान करते हैं। इन धर्मग्रंथों में कहा गया है कि कायस्थों के अतिरिक्त अन्य जाति के लोग भी चित्रगुप्त जी की पूजन करते हैं तो इस पूजन से उन मनुष्यों की आयु बढ़ती है तथा उन्हें नरक के कष्ट नहीं भोगने पडते है और वे स्वर्ग के अधिकारी होते हैं। (विभूति फीचर्स)

## बाल जगत......

# क्यों मनाते हैं दीपावली

(चारु सक्सेना–विभूति फीचर्स)

हमारे देश में दीपावली का त्यौहार बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। सभी लोग अपनी–अपनी परम्परानुसार दीपावली मनाते हैं। सारे भारत देश में दीपावली का त्यौहार पांच दिनों तक मनाया

जाता है। दशहरे से ठीक बीस दिन बाद कार्तिक माह की अमावस्या को दीपावली का मुख्य त्यौहार मनाया जाता है लेकिन दीपावली पर्व का क्रम धनतेरस से प्रारंभ हो जाता है। कार्तिक माह की त्रयोदशी तिथि धनतेरस या धन्वंतरि जयंती के रूप में मनायी जाती है। इसके अगले दिन नरक चतुर्दशी का पर्व होता है। अमावस्या को दीपावली मनाने के बाद अगले दिन प्रतिपदा को गोवर्द्धन पूजा और अन्नकूट महोत्सव होता है। कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया तिथि को यम द्वितीया कहा जाता है। इस दिन भगवान चित्रगुप्त और कलम–दवात की पूजा की जाती है। पूजा के बाद बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर भाई दूज का पर्व मनाती हैं। दीपावली के दिन लोग देवी महालक्ष्मी का पूजन करते हैं तथा एक– दूसरे का अभिवादन करते हैं। तत्पश्चात् बालक– वृद्ध, युवक– युवतियां मिल–जुलकर पटाखों– फुलझडियां– बमों आदि का आनंद उठाते हैं। चारों तरफ बमों, रॉकेटों, की आवाजें तथा फुलझड़ी पटाखों की रोशनियां बिखरती रहती हैं। मंदिरों में भी भगवान का विशेष श्रृंगार किया जाता है। दीपावली पर प्रायः सभी वर्ग के लोगों को आर्थिक लाभ भी होता है। ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसकी कुछ न कुछ खपत दीपावली पर न होती हो। दीपावली ही एकमात्र ऐसा त्यौहार है जो हमारे दो महान अवतारों राम तथा कृष्ण से जुड़ा हुआ है।

दीपावली का दूसरा दिन गोवर्धन पूजा का होता है। इस दिन गोबर से गोवर्द्धन पर्वत की अनुकृति बनाकर उसकी पूजा की जाती है। पशुओं को नहला–धुलाकर उनका श्रृंगार किया जाता है। मंदिरों में अन्नकूट मनाया जाता है जिसमें अनेक प्रकार की साग–सब्जियां एवं पकवान बनाए जाते हैं। मानव का पशुओं के प्रति प्रेम तथा करुणा प्रकट करने का यह एकमात्र त्यौहार है।

दीपावली के त्यौहार के संबंध में किवदंती है कि (1) अयोध्या के राजा राम चौदह वर्ष के लम्बे वनवास के बाद लंका के राजा रावण को मारकर अपनी पत्नी सीता तथा भ्राता लक्ष्मण के साथ इसी दिन अयोध्या वापिस लौटे थे। उनके आने की खुशी में अयोध्यावासियों ने अपने–अपने घरों को पूर्ण रूप से साफ–स्वच्छ तथा पवित्र कर रखा था। सारी अयोध्या नगरी रंग बिरंगे फूलों–पत्तियों तथा बंदनवारों से सज्जित थी। अयोध्या नगरी के समस्त घरों की मुंडेरों पर दीपकों की इतनी कतारें लगाकर रोशनी की गई थी कि अमावस्या की अंधेरी रात भी पूर्णमासी की उजली रात में बदल गई थी। ऐसा लगता था मानों देवराज इंद्र की इंद्रपुरी ही पृथ्वी पर उतर आई हो। इसीलिए हम आज भी भगवान राम की याद में इस दिन अपने–अपने घरों तथा प्रतिष्ठानों की पूर्ण सफाई करते हैं तथा सारे शहर को रोशनी से जगमग करते हैं। (2) कुछ लोगों की मान्यता है कि इसी दिन मां दुर्गा ने शुम्भ–निशुंभ नामक दो भंयकर अत्याचारी राक्षसों का वध करके लोगों को भय मुक्त किया था। (3) कुछ लोगों के अनुसार इस दिन अर्द्धरात्रि के पश्चात् धन तथा वैभव की देवी महालक्ष्मी क्षीरसागर स्थित अपने निवास से विश्व–भ्रमण करने को निकलती है तथा जो भी घर उन्हें सबसे ज्यादा सुंदर, स्वच्छ तथा पवित्र लगता है उसी पर वह अपनी विशेष कृपा दृष्टि करके उसे धन–धान्य से पूर्ण कर देती है। इन्हीं मान्यताओं के कारण हम अपने घरों तथा प्रतिष्ठानों की संपूर्ण सफाई–रंग–रोगन तथा मरम्मत आदि करते हैं तथा उन पर सजावट तथा रोशनी करते हैं तथा रात्रि को महालक्ष्मी का पूजन करते हैं।

कारण चाहे कोई भी हो यह सत्य है कि दीपावली के बहाने ही हमारे घरों तथा प्रतिष्ठानों की संपूर्ण रूप से साफ–सफाई हो जाती है। यदि दीपावली न हो तो संभवत हम कभी भी इतनी सूक्ष्मता से सफाई न कर सकें। यही नहीं सफाई के बहाने हमारे पूरे घरों तथा प्रतिष्ठानों में मौजूद सामान का भौतिक सत्यापन भी हो जाता है। जो व्यक्तियों तथा दुकानदार दोनों के लिए लाभदायक होता है। अनुपयोगी वस्तुएं बाहर निकल जाने से जहां जगह हो जाती है वहीं अनेक गुम हुई वस्तुएं भी पुनः मिल जाती हैं। व्यापारीगण पुराने सामान को औने–पौने दामों में बेचकर लाभ कमा लेते हैं। लोग अपनी–अपनी सामर्थ्य के अनुसार इस त्यौहार पर कुछ न कुछ सामान अवश्य खरीदते हैं। इससे सैकड़ों लोगों को रोजगार मिलता है। यह त्यौहार हमें सिखाता है कि अंधकार पर सदैव प्रकाश की विजय होती है। एकता की शक्ति महान् होती है। मिल–जुलकर रहने से तथा काम करने से असंभव भी संभव हो जाता है। दीपक चाहे कितना ही नन्हा क्यों न हो। किंतु जब उनकी एक साथ कतारें लगाकर रोशनी की जाती है तो अमावस्या की घनी काली रात भी उनकी एकता के आगे हार मान लेती हैं। हम भी शिक्षा रूपी ज्ञान का दीपक जलाकर हमारे देश में फैले अशिक्षा तथा अन्धविश्वास के घने अंधेरों को दूर कर सकते हैं। यदि हम एक सौ करोड़ से अधिक लोग निहत्थे भी मिलकर एक साथ खड़े हो जायें तो किसकी मजाल है जो हमारी तरफ आंख उठाकर देखने का साहस कर सके। अतः हमें इस त्यौहार को मात्र मनोरंजन के लिए ही नहीं मनाना चाहिए अपितु एक महान् प्रेरणादायक त्यौहार के रूप में मनाना चाहिए।

(विभूति फीचर्स)

# लोक गायिका विजया भारती से विशेष साक्षात्कार

उग हो सुरज देव, अरघ के बेरिया"

(शत्रुघ्न प्रसाद –विनायक फीचर्स)

"पटना के महंगी पनवा, खाइब गमकदार हो"

"उग हो सुरज देव, अरघ के बेरियाइ"

"मोरे राजा केंवड़िया खोल, रस के बूनी पड़े"

"दुनिया में छा गये बिहारी रे, बोलो जय जय बिहारी"

ये लोक गीत भारत की आत्मा की धड़कन हैं। और इन धड़कनों को चार दशकों से स्वर दे रही हैं – भारतीय लोक संगीत की शीर्ष साधिका, विजया भारती।

संगीत और हिंदी में डबल एमए व विद्यावाचस्पति विजया भारती देश की जानी मानी लोकगायिका, एंकर, कवयित्री व लोक संस्कृति की मर्मज्ञ हैं। आकाशवाणी व दूरदर्शन की टॉप ग्रेड कलाकार विजया ने देश के कोने–कोने से लेकर 20 से अधिक देशों में भारतीय लोक संस्कृति का परचम लहराया है। तमाम टीवी चैनलों पर नियमित कार्यक्रम के अलावा आपने महुआ टीवी पर लगातार चार साल तक प्रतिदिन 'बिहाने बिहाने' कार्यक्रम की एंकरिंग कर रिकार्ड बनाया है। अनेक पुरस्कारों के अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें 'कुपोषण' और 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान में शामिल होने के लिए प्रेरित और निमंत्रित भी किया।

बिहार में जन्मी और मुंबई में पली–बढ़ी विजया भारती ने हिंदी, भोजपुरी, मैथिली, अंगिका, मगही के अलावा राजस्थानी, हरियाणवी, संथाली, असमिया आदि अनेक भाषाओं में गायन कर भारतीय लोकगायिकी को वैश्विक पहचान दिलाई है। वे केवल गायिका नहीं, बल्कि लोक संस्कृति की विचारक, रचनाकार और सांस्कृतिक नीति की सजग प्रहरी हैं। प्रस्तुत हैं उनसे लिए गए साक्षात्कार के मुख्य अंश–

प्रश्न लोकगीतों को आप सनातन से कैसे जोड़ती हैं?

विजया भारती– वेदों में कहा गया है – "संगीतं ब्रह्म स्वरूपं।" लोकगीतों में वही छंद और स्वर सहज रूप से बहते हैं जो ऋग्वेद के मंत्रों में हैं। लोक ही सत्य है और सनातन भी। शास्त्रीय संगीत उसका परिष्कृत रूप है, पर मूल तो लोक ही है।

प्रश्न– छठ गीतों में आपकी विशेष पहचान रही है। कुछ उदाहरण देंगी?

विजया भारती – इस साल मेरे दो छठगीत रिलीज हुए हैं। इंडियन फोक स्टार विजया भारती के नाम से मेरे यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध इन दोनों गीतों के बोल भी मैंने लिखे हैं। एक भोजपुरी और एक मैथिली में। इससे पहले मेरे गाये अनगिनत छठ गीत टी सीरीज और अन्य कंपनियों और चैनलों से रिलीज हुए, और यूट्यूब पर उपलब्ध हैं। मैंने इन्हें न केवल गाया, बल्कि कई गीत स्वयं लिखे और संगीतबद्ध भी किए हैं।

प्रश्न आपने मंचों से लेकर टीवी और फिल्मों तक अपनी कला का विस्तार किया है। कुछ अनुभव साझा करें?

विजया भारती – मैंने अमिताभ बच्चन, अमरीश पुरी, गोविंदा, यश चोपड़ा, मनोज बाजपेयी जैसे दिग्गजों के साथ मंच साझा किया है। प्ब्ब्ल् के माध्यम से रूस, ब्रिटेन, जर्मनी, त्रिनिडाड जैसे 22 देशों में कार्यक्रम किए। त्रिनिडाड के एक अखबार ने मेरे कार्यक्रम को "म्समबजतपलिपदह ठींतंजप" कहा– यह मेरे लिए गर्व का क्षण था।

प्रश्नः सांस्कृतिक राजनीति को लेकर आपने मुखरता दिखाई है। क्या कहना चाहेंगी?

विजया भारती – कुछ कलाकार राजनीतिक संबंधों के बल पर मंच तय करते हैं, यह प्रतिभा के साथ अन्याय है। मुझे राजनीति से उतना ही सरोकार है जितना किसी आम नागरिक को। मैंने कभी किसी संबंध से लाभ नहीं लिया, और ना ही चाहा।

प्रश्न लोक संस्कृति के लिए आपकी नीति–सुझाव क्या हैं?

विजया भारती – कोविड के बाद लोक कलाकारों के कार्यक्रमों में भारी गिरावट आई है। दूरदर्शन को लोक संगीत के लिए समर्पित चैनल आरक्षित करना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में लोक–संस्कृति को शिक्षा से जोड़ने की बात है, पर क्रियान्वयन नहीं दिखता। एक समर्पित सांस्कृतिक नीति बननी चाहिए।

प्रश्न साहित्य और समाज में आपका योगदान क्या रहा?

विजया भारती – मेरे 10 कविता संग्रह और एक कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। 'बेटी बचाओ', 'कुपोषण', 'बाल श्रम', 'पर्यावरण संरक्षण' जैसे विषयों पर लोकगीतों के माध्यम से जनजागरण किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पत्र लिखकर इन अभियानों में आमंत्रित किया था।

प्रश्न आपकी लोकगायिकी का सार क्या है?

विजया भारती – "विशुद्ध लोक संगीत मन को माटी की सुगंध से भर देता है।" यह केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मनोविज्ञान का सार है।

प्रश्नः भारत की सांस्कृतिक एकता के लिए आपकी पुकार क्या है?

विजया भारती – उत्तर के लोक को दक्षिण से, पश्चिम के लोक को पूर्व से जोड़ना भारतीयता को बढ़ावा देगा। भारत की पुकार है–लोक का संरक्षण।

प्रश्नः आज कई कलाकार बिहार में चुनाव लड़ रहे हैं। क्या कहेंगी?

विजया भारती – मुझे राजनीति से उतना ही सरोकार है जितना किसी आम नागरिक को। मैं उन सभी कलाकारों को शुभकामनाएं देती हूँ। पर यह भी सत्य है कि कई मंच राजनीतिक संबंधों से तय होते हैं, जो प्रतिभा के साथ अन्याय है।

प्रश्न भारत की माटी से विश्व मंच तक आपने कहां–कहां प्रस्तुतियां दी हैं?

विजया भारती– बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, असम, मेघालय, पश्चिम बंगाल, गुजरात, ओडिशा और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में हजारों प्रस्तुतियाँ दी हैं। मुंबई में छठ के अवसर पर मेरे कार्यक्रम लगातार 17 साल हुए हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मैंने 22 देशों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

प्रश्न सुरों की साधना से लेकर फिल्म, मंच और बॉलीवुड में आपका क्या योगदान रहा है?

विजया भारती– मैंने रवींद्र जैन के संगीत निर्देशन में 'धर्मयुद्ध', 'गाँव आजा परदेसी' जैसी फिल्मों में गाया है। 'टूटे ना सनेहिया के डोर' में अभिनय भी किया है। जुहू बीच पर अमिताभ बच्चन, शारदा सिन्हा, मनोज तिवारी, पूनम ढिल्लो, रवीन्द्र जैन, जितेन्द्र, उदित नारायण जैसे कलाकारों के साथ मंच साझा किया है।

प्रश्न आपने गायन के अलावा साहित्य सृजन भी किया है। कुछ बताएँ।

विजया भारती – मेरे 10 कविता संग्रह और एक कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। पहली पुस्तक "रंग पिया का सोहना" थी। रोमांटिक से लेकर विभिन्न भावों से जुड़ी कविताओं का संकलन। इसका विमोचन गोवा की राज्यपाल रहीं मृदुला सिन्हा ने किया था। बीते वर्ष मेरे कविता संग्रह 'वतन पे कुर्बान' का विमोचन जनरल वीके सिंह ने किया। मैंने लोकगीतों के माध्यम से सामाजिक जागरण किया है। अपने गीत भी मैं खुद लिखती और धुन बनाती हूँ।

प्रश्न एक लोक गायिका के तौर पर आपके लिए भारत की पुकार और लोक का संकल्प क्या है?

विजया भारती– यह अमृत काल है। इस समय भारत को चाहिए कि वह लोक संस्कृति को केवल उत्सवों की शोभा नहीं, बल्कि नीति का हिस्सा बनाए। मेरी पुकार है–"भारत की पुकार है, लोक का संरक्षण हो, संवर्धन हो और बेहतर प्रोत्साहन भी मिले।"

(विनायक फीचर्स)

## आप सभी को हॅपी न्यू इयर नये वर्ष अभिनंदन

नये युग की आप सबको बहुत बहुत मुबारक हो!!! मुबारक हो!!!मुबारक हो......आज बुधवार 22 ऑक्टोबर 2025 बाप दादा का वतन का दिव्य संदेश आदरणीय गोदावरी दीदीची द्वारा!!!

आज नये साल के निमित्त जाना हुआ, तो बाबा ने कहा आओ "बच्चे नये साल या नया युग कहेंगे,बच्चे सब कुछ आपके हाथ मे है! साल या नया युग करना है? बच्चे आपके हाथ है! सभी बच्चों को बाबा कह है रहे थे!लेकिन पता नही बच्चे को पुरुषार्थ मे तीव्रता क्यू नही लाते है!बच्चे सारे दिन मे याद मे चार्ट क्या कर रहा है?बच्चे आप बाबा को पूछते हो विनाश काब होगा कब होगा?सामने आ चुका है, तो बाबा प्रश्न बच्चों को पूछते है! विनाश की घडिया सामने आज चुकी है,तो आप संपन्न कब बनेंगे?सभी बच्चों ने अपने आपको कहा तक तैयार किया है? कितना तयार किया है? फिर बाबांने प्रश्न पुछ्या कहा ये तिसरे प्रश्न का जवाब भी आपके पास है!!पहिला प्रश्न का जवाब, बच्चो मे आलस्य अलबेला पण है!दुसरे प्रश्न का जवाब बच्चे हरेक अपना अपना दे रहे थे!तिसरे प्रश्न का जवाब तीन बातो मे होगा!तेयारी हो, एक )स्वभाव दुसरा )संस्कार तिसरा) समर्पित जीवन की तयारी कैस होनी चाहिये? बच्चे सभी को कहते है नवयुग आ रहा है,लेकिन नया परिवर्तन होना है! फिर बाबा ने दीदी को कहा कि ये प्रश्न आप सभी से पूछना!फिर बाबा ने कहा अच्छा बच्चे!!!!!

भोग स्वीकार किया, फिर कहा बच्चे अभी तो कुछ करके दिखाओ!" बाबा के बच्चे बन चुके,लेकिन चाल चलन लौकिक वाली है! आप कुछ तो परिवर्तन हो!! फिर बाबा सेकंड मे अदृश्य हो गये। ओम शांती

# भावपूर्ण श्रद्धांजली

**स्वर्गीय श्रीमती शशिकला पाण्डेय**

अत्यंत दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है प्रसिद्ध गीतकार श्री आनंद पांडे केवल (ताड़केश्वर पाण्डेय) जी की धर्मपत्नी श्रीमती शशिकला पांडे जी का स्वर्गवास 16 अक्टूबर 2025 गुरुवार को हो गया है

अतः दिवंगत आत्मा की शांति हेतु आपसे अनुरोध है कि निम्नलिखित कार्यक्रम में सम्मिलित होकर हमें कृतार्थ करें

**दसवां (बाल)**

**25/10/2025 शनिवार**

स्थान - श्याम तालाब जोगेश्वरी समय सुबह 11:00 बजे

**27/10/2025 सोमवार को तेरहवीं (ब्रह्मभोज)**

पता -पूनम दर्शन बिल्डिंग बी विंग पहला महला 107

पूनम नगर अंधेरी ईस्ट मुंबई -93

**समय शाम 6:00 बजे**

शोकाकुल समस्त पांडे परिवार

**संपर्क सूत्र**

9820221951

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

## स्वर्गीय श्रीमती शशिकला पाण्डेय

अत्यंत दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि हमारी धर्मपत्नी श्रीमती शशिकला पाण्डेय जी का स्वर्गवास 16 अक्टूबर 2025 गुरुवार को हो गया है।

अतः दिवंगत आत्मा की शांति हेतु आप से अनुरोध है कि निम्नलिखित कार्यक्रम में सम्मिलित होकर हमें कृतार्थ करें।

दसवां (बाल)

25/10/2025 शनिवार

स्थान- श्याम तालाब

समय - सुबह 11 बजे

27/10/2025 सोमवार को तेरहीं (ब्रह्मभोज)

पता - पूनम दर्शन बिल्डिंग बी विंग पहला महला 107

पूनम नगर अंधेरी ईस्ट, मुम्बई 93

समय - शाम 6 बजे

शोकाकुल समस्त पाण्डेय परिवार

सम्पर्क सूत्र

9820221951

# मासमा ने रचा इतिहास एम.एम.आर कमेटी कलंबोली का चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापति और उप चेयरमैन जितेश भंशाली बने

मुंबई। कलंबोली मे एम.एम. आर. कमेटी के चेयरमैन पद पर मेटल एंड स्टेनलेस स्टील मर्चेंट ऐशोसियशन मुंबई (मासमा) के प्रतिनिधि प्रह्लाद प्रजापती और उप चेयरमैन जितेश भंशाली निर्विरोध चयनित कीये गये। मुंबई महानगर के बांद्रा स्थित एम.एम. आर. डी.ए. के मुख्यालय मे चेयरमैन और उप चेयरमैन पद के लिए कमेटी सदस्यगणो उपस्थित हुए। सभी सदस्यगण ने मिलकर प्रह्लाद प्रजापति को चेयरमैन और जितेश भंशाली उप चेयरमैन के मनोनीत करते ही सभी ने ख़ुशी ज़ाहिर की एम.एम.आर. कमेटी मे पहली बार मे मासमा का चेयरमैन और उप चेयरमैन बना जो मासमा के लिए ऐतिहासिक पल बन गया। मासमा अध्यक्ष चंदन भंशाली, मासमा उपाध्यक्ष गणपत पुरोहित कलंबोली सदस्य अशोक भंडारी, संजय जैन इस यादगार पल के साक्षी बनने के लिए उपस्थित रहे।

मासमा कार्यालय मे शाम को चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापति और उप चेयरमैन जितेश भंशाली के सम्मान मे स्वागत समारोह भव्यातिभव्य रुप से सम्पन्न हुआ। मासमा अध्यक्ष चंदन भंशाली ने इस पल को यादगार बनाने के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष साथ सहकार देने वाले सभी का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन मासमा सचिव प्रवीण अंगारा ने कीया। चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापति और उप चेयरमैन जितेश भंशाली ने भी सदस्यो को संबोधित कीया। मासमा उपाध्यक्ष गणपत पुरोहित, मासमा सह सचिव अमृत संघवी, मासमा कोषाध्यक्ष हनुमान गॉधी उपस्थित रहे। मासमा मिडिया कन्वेयर मंगलचंद सेठ ने भी विचार प्रकट कीये। सभी को मिठाई खिलाकर मुहुँ मिठा करवाया। महाराष्ट्र के केबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा के कार्यालय मे जाकर मासमा अध्यक्ष चंदन भंशाली के नेतृत्व मे चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापति, उप चेयरमैन जितेश भंशाली, संजय जैन, अशोक भंडारी शिष्टाचार मुलाकात की। कार्य सम्राट लोकप्रिय केबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा ने मासमा प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त कीया हर पल आपके साथ रहुँगा। यह जानकारी मासमा मिडिया कन्वेयर मंगलचंद सेठ ने दी।

**ज्ञान सरोवर**
**(हिन्दी साप्ताहिक)**

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

**सम्पादक**

**पूजा प्रसाद पाण्डेय**

मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।

**सोच अच्छी ख़बर सच्ची**